REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2019

# गुजरात में सल्तनत के समय की वावें

डा.निलेशकुमार जी. वसावा
आसि.प्रोफसर, सरकारी विनयन कोलेज वांकल, जी.सुरत.

## ❊ सारांश :

गुजरात में सोलंकी-वाघेला राज्य अमल दरम्यान स्थापत्यो का बहुत विकास हुआ। हिन्दु पद्धति के मुताबिक उसके बांधकाम हुए। मुस्लिम राज्य की स्थापना होने से धार्मिक बांधकामो के साथ नागरिक बांधकाम हुए। इस नागरिक बांधकामो में वाव मुख्य थी। ज्यादातर मुसलमान स्त्री या वटलायेल स्त्रीओने वाव बंधाई हो ऐसे उदाहरण है। इस समय में वाव में फ्ट के नीचे चोरस स्तंभो का टेका देने की बजाये कमान आकार का वाव में कमानोरुपी टेका देकर वाव बनने लगी। फ्ट गोल घुम्मट जैसे बनने लगे। सल्तनत काल में मुख्य जलाशयो में वाव का समावेश हुआ है। ज्यादातर ये वावें महमूद बेगडा के समय की है। इस वावो की विशेषता में कम विस्तार में ज्यादा उंडाण का खोदकाम रहता। पगथिये की पद्धति भी कूंड प्रकार की रहती। इस वावो को ऊंडा कूंड कहने मे कोइ वांधा न आवे उसके बाद जो पीढिया इनकी जगा पर से हट जाय या धरतीकंप होने से उसकी पकड ढीली पड जाय इसीलिए पीढियाने कमान साथ ज्यादा मजबूताई से पकडाते थे। जो सल्तनत काल के वाव बांधनारको इस नबलाई का ख्याल आने से उन्होने वावो की लंबाइ बढाकर क्रमे क्रमे ऊंडे उतारने की योजना की इसीलिए वावें लम्बी ज्यादा उंडाइवाली बनने लगी। उदाहरण घोघा की वाव, धोलका की वाव, अडालज की वाव आदि। वाव का बांधकाम चूने, कोंक्रीट मीकस करके वाव बंधाते। पहले कूवा खोद लेने के बाद अमुक उंचाई पर पानी की सपाटी की नजीक की आखिर में आखिर जो हो उसे जहाँ से पानी आता पास के कुंड में संग्रहाय वहाँ से प्रवेश का अंतर नक्की कर के बीच-बीच गाला रखकर खोदकाम उंडा होता जाता। एक गाले का खोदकाम पूरा होने के बाद उसके उपर बांधकाम कर लेने के बाद वह पगथिये रखते स्तंभो के साथ पाटडिया जड देते और आसपास की भींत में पथ्थर उंडे तक जाने देते उसे टेके से बराबर पक्कड देते। वाव की लंबाई-पहोलाई बढी, जाने और आने की सरलता बढी, और ज्यादा आल्हादक बनी।

सुल्तान मेहमूद बेगडा की अडधी सदी के समय में गुजरात और अहमदाबाद में स्थापत्य का उत्तम नमूने खडे हुए। गुजरात के आभुषणरुप सुंदर वावे भी इस समय में बंधाई। अहमदाबाद के असारवा में आज भी दो बडी वावे है। माता भवानी की वाव, दादा हरी की वाव या बाइ हरी की वाव, धोलका की वाव है। माता भवानी वाव की रचना हिन्दु बांधकाम पद्धति को ज्यादा अनुकूल हो ऐसी लगती है। इसीलिए यह वाव खूब ज प्राचीन है ऐसा बहोत विद्वानो का मानना है। वाव में मनाता स्थापत्य पीछे से हुआ है। माधावाव, गंगावाव, राणकीवाव, वायड की वाव से ज्यादा सल्तनतकाल की वाव पद्धति अलग और ज्यादा सलामत दीखती है।

## ❊ माला भगत की वाव :

कडी में माला भगत की वाव अच्छी है। यह वाव मुसलमान के समय में बंधाई हो ऐसा लगताहै। दूसरी वाव कडी में लक्ष्मीपुर गाँव जाने के रास्ते पर आती है। यह वाव तीन मजले की है।

## ❊ बाबरी वंश के बादशाहो के समय की वावें :

गुजरात में बाबरी वंश के बादशाहो के समय में बहोत सी वावें बंधाई थी। इस समय की वावें इंट और चूना और कोंक्रिट

मिश्रित वावो के बांधकाम में उपयोग में लिया था। ज्यादातर वाव काटखूने बंधाई शुरु होती थी। इस समय की वावें सादी बंधाणी है। वाव के पहले मजले का भाग उपर के आगे के भाग पे मंडपिका उसके उपर गोलाकार गुंबज जैसा आकार उसकी चारो तरफ किल्ला जेसा कांगरा और वाव की बाहर के भाग की दीवाल को भी कांगरा जैसा भात लगाई थी। उदाहरण : घोघा की वाव, गोपनाथ पास की वाव, सोनेरी वाव, धंधुका केपास की वाव। ज्यादातर वाव सादी बांधणी वाली है।

### ❊ वायड की वाव :

पाटण से २४ कि.मी. बनास नदी के दक्षिण भाग में वायड गाम है। डॉ.बर्जेश वायड की वाव को हिंदु रचना गीनते है। वाव का रुप और स्तंभ की रचना उपरांत आयोजत देखकर यह इस्लामकाल से ज्यादा नजदीश आई है। यह वाव ३६ मीटर लांबी और ४ मीटर पहोली है। पांच मीटर की रचना वाली यह वाव उसके पडथार टूंके है और बहोत छोटे है। तीसरा मजला तो उमराणा मात्र ०.७५ मीटर पहोलाइ का है। कूवे का व्यास ४ मीटर है। नीचे की तरफ सांकडा देखने को मिलता है। वाव के स्तंभ अडालज की वाव जैसे है। वह सादे है। यह वाव मुघल काल में बनाई गई हो ऐसा संभव है। यह वाव में १८ सदी के शिवमंदिर शिल्प रखे हुए है।

### ❊ पाटण की खारी वाव :

१७मी सदी में पाटण में यह वाव बंधाई थी। पाटण की उत्तर दिशा में आयी हुई है। इस वाव में से खारा पानी मिलने से इस विस्तार को खारी वाव का विस्तार कहते है। इस विस्तार में श्रावको की बस्ती ज्यादे थी। वाव सादी है और कोई कोतरणी काम नहीं।

### ❊ मोडासा की वाव :

बादशाह जहांगीर के समय में अहमदाबाद के ममीपुर नामक परा में से मिला हुआ एक लेखन पर से जानने को मिलता है। यह वाव एक मुस्लिमने मोडासा में बंधाई है। यह वाव १६२२ में बंधाई थी।

### ❊ रोहानी वाव :

पालनपुर से ७ कि.मी. दूर सरोत्रा के पास रोहा गाम आया है। इस वाव में चार शिलालेख है। वाव के स्तंभ भी कोतरे हुए है। पूरी वाव सफद आरस में बनाई हुई है। वाव में बांधने के सभी ओनीर पूराने मंदिरो का उपयोग किया है। वाव प्रदेश के पास में एक छोटी देरी है। पगथीया से पहले २ मीटर पहोला पडथार है। वाव के मध्यभाग में अष्टकोण देखने को मिलता है। राजा श्री मन की पत्नी चंपा और उसकी पुत्री सज्जाबाइने रु.५१,००/- खर्च कर के देरीयाँ बनाई है।

### ❊ शामलाजी की वाव :

शामलाजी का मुख्य मंदिर देवगणधरके मंदिर के सामने त्रिलोकीनाथ के मंदिर केपासमें एक वाव आई है। वाव का प्रवेशद्वार दक्षिणाभिमुख है। वाव में लगभग पाँच कोठे हो ऐसा जानने को मिलता है। पहले मजले के गोख में खंडित प्रतिमाएँ है। प्रतिमा पहचानी जाती नहीं। उसके दूसरे माल के पडथर के एक गोख में शेषशायी विष्णु की खडित प्रतिमा आई है। वाव लाल पत्थर से बनाई हुई है। वाव का बांधकाम देखने के बाद ऐसा लगता है कि मंदिर के बांधकाम के बाद वाव बंधाई हो ऐसा लगता है। इसीलिए मंदिर के उपयोग हेतु वाव बंधाई है। आज यह वाव पुरातत्व खाते के रक्षण तले है। वाव के प्रथम मजले के गोख में गणपति की पोपट की कोतरणी है। वाव के दूसरे मजले दरवाजे के कोने पर हाथी का शिल्प खूब ज आकर्षक है।

### ❊ त्रीकम बारोटनी वाव :

पाटण में त्रीकम बारोट की वाव के नाम से हाल में एक वाव पहचानी जाती है। यह वाव आनंदराव गायकवाड के समय में इनामदार बारोट, बहादुरसिंह जनकरणसिंने ई.स.१८०६ में बंधाने की शुरुआत की जो इनके पुत्र ने १४,९२५ रु. खर्च करके ई.स.१८१२ में पूरी कराई है। इस वाव के बांधकाम में राणीवाव के पत्थरो का उपयोग किया है। वाव पांच मजले की है। दो छोटे मजले इँटो से और तीन मजले पत्थरो से बंधाई हुए है।

वावें गुजरात के शणगार का एक महत्व का अलंकार है। इस अलंकार द्वारा गुजरात में वाव स्थापत्य की गणना भारत के विद्वानो, पुरातत्वविदो और विदेशो में पर्यटको और कलातत्व वेचकोने वावो की नोंध ली है। उस समय की सभी वावें सुंदर और अलंकत नहीं थी। वावें लोगो के सामाजिक, राजकीय और धार्मिक जीवन की कथा कहती है।

आज वाव का उपयोग क्युं होता नहीं या कितना होता है। विज्ञान के युग में लोगो के कहने में आया के वाव का पानी पीने से बालों का रोग होता है। इसी रोगो के परिणाम स्वरुप नल-गटर, नहेर योजना, पानी की टाँकीयाँ, नगर पंचायत, मयुनिसिपल कोर्पोरेशन आदि संस्थाएँ लोगो को घर घर पानी पहोंचाने की व्यवस्था करती है। इसोलिए वाव के पानी का उपयोग बंध हुआ। आज गुजरात का इतिहास उसकी संस्कृति अडीखम खडी हुई देखने को मिलती है और उसके समय की इतिहास में साक्षी देती है।

## ❊ संदर्भसूचि :


१. कवि दलपतराम डाह्याभाइ, ''गुजरात का ऐतिहासिक प्रसंग और कहानियाँ'', मुंबइ, १९४०
२. मास्तर फरामरोज सोराबजी, ''पालणपुर अेजन्सी डिरेक्टरी'', भाग-४, अहमदाबाद, १९०८
३. नवाबजादा तालेमहंमदखान, ''पालणपुर राज्य का इतिहास'', भाग-१, वडोदरा, १९१६
४. नवाबजादा तालेमहंमदखान, ''पालणपुर राज्य का इतिहास'', भाग-१, वडोदरा, १९१६
५. शास्त्री हरिप्रसाद और परीख प्रविणचंद्र (संपादकें), गुजरात का राजकीय और सांस्कृतिक इतिहास, ग्रंथ-६ ''मुघलकाल'', अहमदाबाद, इ.स.१९७७
६. मास्टर फरामरोज सोराबजी, ''पालणपुर अेजन्सी डिरेक्टरी'', भाग-४, अहमदाबाद, १९०८
७. नवाबजादा तालेमहंमदखान, ''पालणपुर राज्य का इतिहास'', भाग-१, वडोदरा, १९१६
८. मास्टर फरामरोज सोराबजी, ''पालणपुर अेजन्सी डिरेक्टरी'', भाग-४, अहमदाबाद, १९०८

**डा.निलेशकुमार जी. वसावा**
**आसि.प्रोफसर, सरकारी विनयन कोलेज वांकल, जी.सुरत.**


LBP PUBLICATION